B.A. II Hindi Hons.

'राम भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ' का शेष भाग

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद।

(3) भक्ति का स्वरूप :- राम का व्यक्तित्व तीनों लोकों में विख्यात है। वे इतने विराट हैं कि उनके प्रति मन बरबस झुक जाता है। शक्ति, शील एवं सौन्दर्य की त्रिवेणी से उनका व्यक्तित्व आलोकित है। अत: उस त्रिवेणी के निकट पहुँचते ही मन श्रद्धा के भाव से भर उठता है। इसीलिए राम भक्ति में श्रद्धा की अधिकता के कारण दास्य भाव की भक्ति की ही प्रधानता है। राम साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर हैं। उनके प्रति श्रद्धा का ऐसा आवेग पैदा होता है कि भक्त उनके चरणों का दास होकर रह जाता है। इस भक्ति को छोड़कर वह परमपद भी नहीं लेना चाहता। भरत जी राम की भक्ति के क्रम में कहते हैं —

अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहौं निरबान।
जनम-जनम रति राम पद, यह बरदान न आन॥

गोस्वामी तुलसीदास की मान्यता है कि सेवक-सेव्य भाव के बिना इस संसार सागर से पार नहीं उतरा जा सकता —

"सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।"

रामभक्त निर्गुण ब्रह्म की आराधना को बहुत ही कठिन मानते हैं। जन सामान्य निर्गुण की उपासना पद्धति का अवलम्बन नहीं कर सकते क्योंकि यह अत्यन्त दुरूह है —

ग्यान को पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥

किन्तु भक्ति अत्यन्त सरल है। उसमें केवल श्रद्धा की आवश्यकता है और राम-चरित का अवगाहन श्रद्धा के उद्रेक हेतु पर्याप्त है — "राम-चरित जहँ सुरसरि धारा।" इस सुरसरि में अवगाहन में न तो योग की, न ज्ञान की, न तो श्रम की आवश्यकता है। गंगा में उतरने की देर है। श्रद्धा का संबल लेकर इस भक्ति की भागीरथी धारा स्वयमेव ही भक्त को अपने में समा लेती है। राम भक्ति में यद्यपि परवर्ती काल में रसिक सम्प्रदाय का आगमन हुआ, भक्ति का स्वरूप बदला जरूर किन्तु प्रधानता दास्य भाव की भक्ति की ही रही।

(5) लोक संग्रह की भावना :- राम भक्ति साहित्य में लोक संग्रह के भाव को प्रधानता मिली है। समाज में समरसता के लिए लोक संग्रह का भाव होना अनिवार्य है। राम भक्ति साहित्य लोक मंगल के भाव का वाहक है अतः उसमें यत्र-तत्र सर्वत्र लोक संग्रह का भाव दिखलाई पड़ता है। तुलसी का राम चरित मानस लोक संग्रह एवं लोक मंगल की भावनाओं का विशाल समुच्चय है। जब महर्षि वशिष्ठ भरत के साथ राम को वनवास से बुलाने के लिए जाते हैं तो उनके तेज को देखकर निषाद दूर से ही उन्हें साष्टांग दण्डवत करता है। वह जानता है कि वह अछूत है और महर्षि तो महान तपस्वी ठहरे। ऐसे में उनके चरणों को छूना अशिष्टता होगी। किन्तु वशिष्ठ उसे राम का सखा जानकर उसे भूमि से उठाकर गले से लगा लेते हैं। इस दृश्य से एक क्षण में ब्राह्मण और शूद्र की अस्पृश्यता की भावना समाप्त हो जाती है और समाज में समरसता का भाव जगाने लगता है। इसी प्रकार राम और शबरी का प्रसंग, काकभुशुंडी का प्रसंग - न जाने कितने ऐसे प्रसंग हैं जिनमें लोक मंगल का भाव स्पष्ट देखा जा सकता है। मानस में तो गृहस्थ जीवन जीवन की उज्ज्वलता के अनेक प्रसंग आये हैं। स्वयं दशरथ का गृहस्थ जीवन मानस की कथा की आधारभूमि बनी है। गृहस्थ जीवन के अपेक्षित और अनपेक्षित भावों को गोस्वामी जी ने बड़ी बारीकी से चित्रित किया है। कैसे मंथरा एक दुष्ट और सम्पूर्ण घर की शान्ति को नष्ट कर सकती है और कैसे राम जैसा पुत्र पारिवारिक अशान्ति को दूर कर सकता है। ये सारे के सारे प्रसंग केवल कथा नहीं हैं वरन लोक मंगल और लोक संग्रह के भावों से भरे हुए विविध स्थल हैं। जिनसे गुजर कर हम राम भक्ति साहित्य में समाहित इस उच्च अवस्था से अवगत होते हैं और जीवन को सहज और सरल बनाने का यत्न करते हैं।